B.A III
PAPER-VII

⇒ जे० एस० मिल के उपयोगितावाद
Utilitarianism of J.S. Mill

जेम्स मिल के प्रयत्नों और बेन्थम के प्रति श्रद्धा ने जॉन स्टुअर्ट मिल को कट्टर उपयोगितावादी बना दिया। बेन्थम के उपयोगितावादी सिद्धांत में मिल ने महत्वपूर्ण संशोधन करते हुए सुखवादी तत्वों का समावेश कर दिया। जिसके फलस्वरूप मूल सिद्धांत प्रायः समाप्त हो सा गया। कॉम्टे, डार्विन, स्पेंसर आदि के प्रभाव तथा इंग्लैंड की परिवर्तित परिस्थितियों के कारण मिल के प्रारंभिक बेन्थमवादी विचारों में शनैः शनैः परिवर्तन आता गया और उसने नवीन सिद्धांतों पर बल देना शुरू कर दिया। उपयोगितावाद की रक्षा करने के प्रयत्नों में उसने इतने संशोधन कर दिए कि उसका स्वरूप ही बदल गया। वेपर के अनुसार "उपयोगितावाद पर लगाए गए आरोपों से उसकी रक्षा करने की इच्छा से मिल ने सम्पूर्ण उपयोगितावाद को ही एक तरफ फेंक दिया"। उसने उपयोगितावाद के स्थान पर व्यक्तिवाद पर अधिक बल दिया और इसलिए राजनीतिक चिंतन के क्षेत्र में उसे प्रायः अंतिम उपयोगितावादी तथा प्रथम व्यक्तिवादी दार्शनिक माना जाता है। मिल ने उपयोगितावाद पर जो विचार प्रकट किए वे उसके प्रख्यात निबंध 'Utilitarianism' में उपलब्ध है।

मिल द्वारा उपयोगितावाद की पुनर्समीक्षा

आरंभ में मिल बेन्थम के सिद्धांत के आधार पर ही आगे बढ़ा। उसने बेन्थम के समान ही सुख की प्राप्ति और दुःख की विमुक्ति को व्यक्ति का अभीष्ट माना। उपयोगितावाद की परिभाषा देते हुए उसने लिखा - "वह मत, जो उपयोगिता अथवा अधिकतम सुख के सिद्धांत को नैतिकता का आधार समझता है, यह मानता है कि प्रत्येक कार्य उसी अनुपात में सही है जिस अनुपात में वह सुख की वृद्धि करता है और जो भी कार्य सुख के विपरीत दिशा में जाता है वह गलत है। सुख का अर्थ है आनंद की प्राप्ति और दुःख का अभाव। दुःख का अर्थ है पीड़ा या कष्ट तथा आनंद का अभाव। इस सिद्धांत द्वारा स्थापित नैतिक मापदंड को अधिक स्पष्ट करने के लिए इससे अधिक कहना अनावश्यक है, विशेष रूप से यह कि सुख और दुःख की धारणाओं में क्या बातें सम्मिलित है और उनका उद्देश्य क्या है यह ...

Scanned by TapScanner

पूर्ण व्याख्याएँ जीवन के उस सिद्धांत को प्रभावित नहीं करती जिस पर नैतिकता का यह सिद्धांत आधारित है कि सुख और दुःख से मुक्ति ही जीवन का एकमात्र लक्ष्य है तथा समस्त वांछनीय वस्तुएं, जिनका उपयोगितावादी योजना में वांछनीय इसलिए है कि या तो उनमें ही सुख का निवास है अथवा वे सुख-वृद्धि तथा दुःख निवृत्ति का साधन है।

स्पष्ट है कि मिल ने बेन्थम के सुखवाद को स्वीकार किया, किंतु कालान्तर में उसके विचारों में धीरे-धीरे एक क्रांति हुई तथा उसका विवरण ऐसा हो गया जिसमें बेन्थम तथा उसके उपयोगितावादी चिंतन में बड़ा अंतर उत्पन्न आए। यह देखना उपयुक्त होगा कि कहां तक वह बेन्थम के साथ और कहां तक उससे पृथक रहे। उसके द्वारा किया गया बेन्थम के सिद्धांत का रूपांतर निम्नलिखित वर्णन से स्पष्ट हो सकेगा।—

1. सुखों में मात्रात्मक ही नहीं, गुणात्मक अंतर भी है
2. सुखों की गणना-पद्धति में परिवर्तन,
3. बेन्थम के सिद्धांत का उद्देश्य सुख या आनंद प्राप्ति था और मिल का आलोचना और सम्मान पर बल।
4. मिल की नैतिकता बेन्थम से अधिक संतोषजनक।
5. स्वतंत्रता उपयोगिता से अधिक उच्च और मौलिक।
6. सुखों की प्राप्ति अप्रत्यक्ष ढंग से होती है
7. मिल का सिद्धांत नैतिक, बेन्थम का राजनीतिक,।
8. मिल द्वारा अन्तःकरण के तत्व पर बल।

मिल का उपयोगितावादी विचारों का मूल्यांकन :—

मिल बेन्थम के विचारों में परिष्कार और संशोधन करते हुए उसकी मौलिक मान्यताओं पर ही कुठाराघात कर देता है

(1.)

प्रो० जोआड ने इस पर टिप्पणी करते हुए लिखा है कि - उसने अपने सुखवाद में सुख के उच्च और निम्न स्तर का नैतिक सिद्धांत और जोड़ दिया। इसका अभिप्राय यह था कि मिल एक मानव को मापने के लिए एक मानक की मांग कर रहा था। यह एक तरह का विरोधाभास था और इसने उपयोगितावाद को पूर्णतः से एक अनिश्चित सिद्धांत बना दिया। सुखों के गुण को परखने का कोई कोई मानक निर्धारित नहीं किया जाता था और यदि वह किया भी जाता तो वह सुख नहीं होता है।

DR. RAHUL KR PASWAN
U.R. COLLEGE, ROSERA
DEPT. of POL. SCI

Scanned by TapScanner